मारे जायेंगे

हमारा नाम
इतिहास में
नहीं लिखा जायेगा
हम भूख से
किसीके जाने बिना
मर जायेंगे
हम बिना अपराध के
किसी के जाने बिना
फांसी के फंदे पर
लटका दिये जायेंगे
हम घर के दरवाजों को
खोले बिना
अंदर ही अंदर
घुट-घुट कर मर जायेंगे
हम उस समय के
आदमी हैं
जब यह समय ही
हमारी हत्या कर देगा
हम ऐसे युग में
पैदा हुए हैं
जब इस युग की
गाथा गाते गाते
हम मारे जायेंगे

-दुर्गाप्रसाद झाला .

रोशनी की आदत

रोशनी -
तम के घर में झांकी ।
रोशनी की -
यह आदत ठीक नहीं है ।
यह बात -
सबने कई बार कही है ।
ऐसी ही -
आदत है हवा की ।
दीये भी तो हैं -
जो घर के बाहर रहे ।
बाहर आंधियों के -
उन्होंने जुल्म सहे ।
दीयों ने -
लाज घरों की ढांकी ।
झांकना ही था तो -
कुंडी खटखटाई होती ।
उसे बाहर से -
आवाज लगाई होती ।
रोशनी ने -
सदा अपनी हांकी ।
अमावसी रात में -
तम वस्त्रहीन लेटा हो ।
पास में दिगम्बर ही -
कोई और बैठा हो ।
सखियों में -
बस अपनी फांकी ।

अशोक आनन
मक्सी

चाय है तो जहान

सुबह उठते ही जब आँख न खुले,
तो चाय बोले — भाई पहले मुझे तो तौले!
अलार्म बजे, मोबाइल चिल्लाए,
बिना चाय के इंसान जॉम्बी बन जाए।
डॉक्टर बोले — 'चाय कम पिया करो',
दिल बोले — 'पहले डॉक्टर बदल लिया करो।'
घर में झगड़ा हो या सन्नाटा छाए,
एक कप चाय सब मामला निपटाए।
पड़ोसी आए बिना कारण- धाम,
चाय पिलाई — और खुद चला गया काम।
ऑफिस में मीटिंग लंबी जब हो जाए,
चाय आते ही बॉस भी मुस्कुराए।
शक्कर ज्यादा हो तो बीपी याद आए,
कम हो जाए तो पूरा मोहल्ला चिल्लाए।
चाय न मिले तो दिन अधूरा लगता है,
जैसे मोबाइल में नेटवर्क ही न आता है।
इस दुनिया में चाहे जो भी हो जाए,
पहले चाय मिले... फिर कैसला लिया जाए!

श्याम माहेश्वरी
प्राथमिक शिक्षक
जिला राजगढ़

नाजुक जिम्मेदारी भी

क्यों इंसान इतना
संवेदनहीन हो गया
हाथ में अब हथैली नहीं
गिनती है
उसकी आँखों में सपना नहीं
हिसाब वह दौड़ रहा
पर नहीं जानता
किस दिशा में,
किससे आगे जाने के लिए।
धन, सत्ता और स्त्री
उसकी जेब में रखे
रंगीन काग़ज़ जैसे हो गए
जिन्हें कई बार
निकालकर देखता
कहीं लुप्त तो नहीं हो गए,

हिंसा अब उसे चौंकाती नहीं
खून अब उसे डराता नहीं
वह समाचार की तरह
सब कुछ पढ़ लेता
और चाय ठंडी होने से पहले
सब भूल जाता है।

प्रकृति जो कभी उसकी माँ थी
आज उसके लिए
एक खामोश ज़मीन का टुकड़ा
जिसे विभाजित
किया जा सकता
बेचा जा सकता
और ज़रूरत पड़े तो
नष्ट भी दिया जा सकता ।

पेड़ों की साँस
नदियों की आँखें
पक्षियों की नींद
सब उसने अपने ही हाथों से
धीरे-धीरे छीनी है
और अब पूछता है
कि मौसम क्यों रूठ गया।

मैं सोचता हूँ
जब आने वाली पीढ़ी
जब हमसे मिलेगी
क्या हम उन्हें
आँखों में आँख डालकर
मुस्कुरा पाएँगे,
या चेहरा छिपाने के लिए
हमें भी कोई नक़ाब ढूँढ़ना पड़ेगा।

शायद अभी भी
देर नहीं हुई
अगर हम
थोड़ा रुकें, थोड़ा झुकें
और यह मान लें
कि मनुष्य होना
ईश्वर का सबसे
बड़ा आशीर्वाद
सबसे बड़ी पूंजी
सबसे महीन,
नाजुक ज़िम्मेदारी भी है।

संजीव ठाकुर, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415

कुंडलिया।

कैसी यह उद्विग्नता, कैसा पापाचार।
कुचले जाते हैं सुमन, छूट रहे संस्कार।।
छूट रहे संस्कार, रुकेगा कब यह पारा।
अस्त9 व्यस्त सब त्रस्त,हुई है जीवन धारा।।
सुनो तरुण की बात,नीति सब कर लो ऐसी।
हो आनन मुस्कान,मलिनता मुख पर कैसी।।
(02)
कुंडलिया।
जिनको पाला प्यार से,गबरू किया जवान।
वह बैरी होने लगे, करते नित अपमान।।
करते नित अपमान,बन रहे अब यह दादा।
मात- पिता स्तब्ध, तोड़ते हैं जब वादा।।
कहे 'तरुण 'कविराय,भेद मत देना इनको।
हुए पराए पूत, जान समझे थे जिनको।।

पंकज शर्मा 'तरुण '
मोती महल गायत्री नगर
पिपलिया मंडी
जिला मंदसौर (म प्र)

भिन्न विषय

वीणा पुस्तक हाथ ले, छेड़ रही शुचि तान।
मां के स्वर मुझको लगे, मधु मिश्री मिष्ठान।।

बेड़ा करना पार प्रभु,लाखों बार प्रणाम।
गणपति बप्पा मैं सदा,
जपूं आपका नाम।।

माता मुझको ज्ञान दो, लिखूं हृदय की पीर।
पार करो मति मंद मैं,ऊर में धारूं धीर।।

करी प्रतीक्षा तब मिले, सबरी को श्री राम।
मीठा फल उसको मिला, मिला बैकुंठ धाम।।

तरी असुरी ताड़का, बड़ी प्रतिक्षा बाद।
धन्य धन्य फिर हो गई ,सुनी राम फरियाद।।

अलका जैन आनंदी दिल्ली

तुम अगर साथ देने का वादा करो

तुम अगर भीम जी को पढ़ने लगो।
राहें जीवन की अपनी गढ़ने लगो।।
हम सहते रहे, वो सताते रहे,
सदियों बोले नहीं, मार खाते रहे,
मार खाने से तुमको बचना यदि,
अपने हक के लिए तुम लड़ने लगो।
तुम अगर भीम जी को पढ़ने लगो...(1)

खूब शोषण हुआ, और रोते रहे,
बोझ बेगारी का भी, ढोते रहे,
शान से जिंदगी गर जीनी तुम्हें,
शातिरों से निडर हो लड़ने लगो।
तुम अगर भीम जी को पढ़ने लगो...(2)

नाम जाति के हमको तो गाली मिली
अपमानों के घावों से छाती छिली,
लाख काटें तुम्हारी राहों में हो,
लक्ष्य पाने निरंतर बढ़ने लगो।
तुम अगर भीम जी को पढ़ने लगो...(3)

सब दुखों का मूल ये अनपढ़ता रही,
बात शिक्षित बनो की सलिह ने कही,
दुखों को मिटाना यदि भारती,
हर हालत में तुम अब पढ़ने लगो ।
तुम अगर भीम जी को पढ़ने लगो...(4)

भूपसिंह 'भारती', बल्डोटिया भवन, आर्टर्स नगर नारनौल (हरियाणा), मो 9416237425

संवेदना

किसी के मन को दुखी देखकर
वेदना जो अपने मन में होती है ।
सहानुभूति सही दिल से जब हो
वही तो सच्ची संवेदना होती है ।
कोई इंसान जब संकट में हो
हमदर्दी थोड़ी सी जो दिखाये ।
संकट में जो साथ खड़ा हो
संवेदना उसके साथ दिखायें ।
घर परिवार रिश्ते आपस में
हों सुख दुख में साथ रहता हैं ।
वेदना सबके मन में होती है
दुखी मन हल्का हो जाता है ।
संकट में कोई सुझाव मिले
अपनापन हमदर्दी ही मिले ।
साहस मन में भी बढ़ता है
मन को भी अच्छा लगता है।
बूंद-बूंद पानी से जैसे
खाली घड़ा भर जाता है ।
चार का सहारा जब मिलता है
हर संकट भी टल जाता है ।
सहानुभूति हमदर्दी रखना
सच्ची संवेदना होती है ।
साहस हिम्मत बढ़ती है
संकट की घड़ी टल जाती है।

डा अनन्तराम चौबे अनन्त, जबलपुर

अनमना मन !!

मन उदास सा है ।
मानो खो गया कुछ ना पास सा है ,
बालको सा दौड़ता बदुरस्ती -ए-होशोहवास
यकीनन बूढ़ों सा अहसास सा है।
है हत्थीला मन गजीला , नम्रता से झुकता सा है
भावनाओं की भंवर में, नाव सा तिरता सा है
भावना में राजसी शान सा है, चातुर्य में विद्वान सा है
मन का मंजर है सिकंदर ,मामूली अदना सा है
सूर्य की किरणों में तपकर , शीत में भी गुनगुना सा है
सांसुरी की बांसुरी बन ,आशीष मन अनमना सा है।।

आशीष बाजपेई राम प्रभा सनराइज एजु. इंस्टी. बिल्हौर मो : 9140065966

विकसित भारत के सपनों का बजट

विकसित भारत के सपनों का बजट
रिफार्मस परफार्म और ट्रान्सफर्म,
मोदी का गुणात्मक सृजनात्मक मंत्र
विश्व में तीं बन जाय एक नंबर हम।
मेक इन इंडिया पर ज्यादा जोर
मिशन दो हजार सैंतालिस मिशन,
टैक्स में राज्यों का हिस्सा बेहतर
सबको साथ ले चलने का विजन।
नया भारत का नया दृष्टिकोण
आपार अवसरों के राजमार्ग मिले,
रेलवे में हो रहा उत्कृष्ट अति सुधार
हर क्षेत्र में विकास के पिटारा खुले।
युवा शक्ति पर सरकार का भरोसा
रोजगार आत्मनिर्भरता की बात,
किसान मजदूर सबको कुछ न कुछ
शिक्षा स्वास्थ्य की मिली सौगात।
टैक्स स्लैब रहा पहले सा यथावत
कर्मचारी गणों के चेहरे कुछ उदास,
मोदी सरकार पर पूर्ण रखते भरोसा
सबकुछ अच्छा ही होगा विश्वास।
सेना के पराक्रम में अकूत इजाफा
बजट में डिफेंस को बूस्टर डोज,
सैन्य उत्पाद के निर्माण पर देश में जोर
दिन दिन आत्मनिर्भर हमारी फौज।

हर क्षेत्र में प्रयास निवेश
सुख समृद्धि का सर्वत्र प्रवेश,
बजट से हर वर्ग अह्लादित
विकास प्रतिस्पर्धात्मक रेस।
विपक्ष की सोच नकारात्मक
केवल भ्रम फैलाने की आदत,
बजट को बताते गरीब विरोधी
कर रहा इस पर गंदी सियासत।
सब मिलकर बजट संतुलित
समाज हित और देशहित,

विपक्ष मचाये शोर बेकार विरोध करने की उनकी रीत। -डॉ यमुना तिवारी व्यथित

किताब पढ़ने का असर

जानता अगर पढ़ी लिखी
हो तो सबसे पहले किसे
नुकसान होने वाला है ?

ऐसे सवाल का जवाब एक
कभी नहीं हो सकते है।
ऐसे सवाल खुले छोर
के सवाल कहलाते है।

बंद छोर सवाल के उत्तर
सिर्फ एक होते है पर खुले
छोर हमें उत्तर सोचने,तर्क
लगाने, विचार करने पर
विवश करता है और सही
उत्तर तक ले जाता है।

उत्तर सबका अलग होगा
सोचने पर मजबूर होगा
विचार क्रांति भी होगा
तर्क भरी सोंच होगा
खोज शुरु होगा ।

सीखने का मजेदार
आगाज होगा
पढ़ने के लिए
किताब होगा
ज्ञान की प्यास
शांत होगा।

तब उत्तर मिल जायेगा
और पढ़ी किताब का
असर दिख जाएगा।

नरेन्द्र नन्द, राधिका नगर, धनतरी, छत्तीसगढ़

मन के कमरे

नेहा अक्सर सोचती थी–
इंसान के भीतर अगर कमरे होते,
तो उसका सबसे बड़ा कमरा मन होता।

उस कमरे में बहुत शोर था,
पर बाहर से नेहा हमेशा शांत दिखती थी।

लोग कहते–
«कितनी समझदार लड़की है।»

पर कोई ये नहीं पूछता था
कि समझदार बनने की कीमत
उसने अपने सपनों से चुकाई थी।

नेहा हँसती थी,
क्योंकि उसे रोने का हक़
कभी दिया ही नहीं गया।

उसका मन हर रोज़ उससे सवाल करता–
तू क्या वही है, जो तू दिखती है?

और नेहा हर रोज़ जवाब टाल देती–
अभी नहीं अभी सब ठीक कर रही हूँ।

नेहा कुमारी

ऐसा प्रयत्न करें

गणतंत्र अपना बने सबल,
आओ ऐसा प्रयत करें।
देश हमारा हो सबसे आगे,
इस हेतु से सब यत्न करें।।

कितने यहाँ बरस बीत गए,
मिटी न ऊँच-नीच की खाई।।
मिलजुल कर हम इसकी,
अपने देश से करें विदाई।।

जाति-वर्ण का भेद भूलाकर,
अब एक नई शुरुआत करें।
भेदभाव सब यहाँ छोड़कर,
सबसे हम मुलाकात करें।।

सब नागरिकों का फर्ज यही,
देश हित पर ध्यान धरे।
जनतंत्र यह खास हमारा,
हर जन का ही मान करें।।

शिवलाल दाँगी,अध्यापक, मोबा. 8435408794

पद्धरी छंद आधारित गीत

कलि काल मनुज मन में कुचाल।
शुभ कर्म बिना सब हैं श्रृगाल।।

यह काल विकट बदला समाज।
बिन श्रम बाँधे सब शीश ताज।।
देखा-देखी अब पाप-पुण्य-
सुत करते नित घर में बवाल।।

अब हीन हुए सब बिन विवेक।
अंतस नायक अभिमान एक।।
बिन श्रम धन मिल जाए कमान-
कर्तव्य विमुख यह चाल-ढाल।।

सुत देते अग्नि को लताड़।
बनकर बैठे सिर पर पहाड़।।
यह हाल युवाओं में वितान-
निज लाज नहीं बेशर्म हाल।।
नारायण साहित्य शाला
सचिव

विनोद बनारसी, वाराणसी उत्तरप्रदेश,

मोबाइल जिंदगी...

एक लाइक छूट जाने के बाद
टूट गया था एक संबंध
एक ही कमेंट में
फिर जुड़ गया संबंध...!

एक ही शेयर से
टूट गया था एक घर
एक ही पोस्ट से
बिछड़ गया परिवार...!

एक शीशा की स्क्रीन में
बंद है हम तुम सब
क्लिक और स्क्रोल में
बंधे हैं हम तुम सब...!

तुमने पूछा था ना
मैंने तुम्हें भुला दिया
कहकर
मोबाइल देखो तो...,
मैंने कमेंट किया है...!

मनोज शाह मानस, नारायणा गांवनई दिल्ली

चाय

आओ बैठे फिर से कभी
सड़क किनारे
किसी नुक्कड़ वाली चाय की गुमटी पर
और होले से बोल दे
चाय वाले भैया को मुस्कुराकर
जैसे सारी दिमागी थकान
उतारने के लिए
दो कट चाय का.....
छोटे से दो बैंड वाले रेडियो में
ट्यून किए
विविध भारती पर बज रहे गाने
% नाम गुम जायेगा... चेहरा ये बदल जायेगा....
को सुनते हुए
आओ ले हम चाय की चुस्कियां
संग एक दूसरे के.....
करें बातें बहुत सारी
दुनिया जहां की
तब तक चाय भी हम पी लेंगे
लेकिन ध्यान अब यह रहे
कि मिठास कभी कम न हो
होठों का जुबान का
और ज़हन का भी.....
जब जब भी कभी
तलब लगेगी चाय की
फिर से हम इसी चाय की दुकान पर
मिल लिया करेंगे
जहां सड़क के पास के खेतों में
उगे हरे चने के खेतों में
भी तोड़ लिया करें कुछ चनों को
और चाय के बाद चख ले चने का
नमकीन सा स्वाद भी
बस यही
मीठा और नमकीन स्वाद
रिश्तों में सदा बरकरार रहे....
इसी उम्मीद के साथ

चलो फिर कभी हम मिलेंगे चाय पर
वहीं पर उसी जगह.....

डॉ सुरेंद्र मीणा

कविता

आज-कल अजीब इत्तेफाक हुआ है
सोने-चांदी में घमासान मचा हुआ है
कौन किसको पटकनी देकर बढ़े आगे
गरीब आदमी तो बेबस लाचार हुआ है
सस्ती दरों पर हासिल चांदी,भाव खा रही
बेटियों, महिलाओं की पहुंच से दूर जा रही
अब तो नकली जेवरों को इस्तेमाल करेंगे
या अन्य धातु के गहनों से नेह रखना जरूरी
चार लाख के पार पहुंच गयीं हैं रजत की दरें
सरकार खामोश बैठी आम आदमी क्या करे
धनाढ्य वर्ग,बिना मोल-भाव खरीदेंगे चांदी
मुफलिसी के मारे,तो सिर्फ मुंह ताका करें
लक्ष्मी पूजन पर रजत सिक्का न खरीदें हम
सोने-चांदी के सिक्कों की फोटो पूजेंगे हम
आगामी विवाह सीजन में दरें 5 लाख पार हों
अब तो आभूषणों के नाम जुबां पर लेंगे हम

रामसेवक गुप्ता
मकराना
राजस्थान

रावण /दशानन

कोई अहं न कीजिए, होता है यह चूर।
दशकंधर को देख लो, नाश हुआ था क्रूर।। 1

जग में कोई था नहीं, रावण-सा धनवान।
रहा अहं उसका नहीं, इसका रखना ध्यान।। 2

मानव अहं न पालिए, घातक है यह खोट।
रावण को ही देख लो, राम किए थे चोट।। 3

अति कारण है नाश का, रावण को ही देख।
तुम मूली किस खेत की,यह है विधि की रेख।। 4

कहे दशानन लोग से, सुन लो मेरी बात।
जब हम मिट्टी मिल गए, तेरी क्या औकात।। 5

अहंकार को त्याग दो, अरु जो ईर्ष्या-द्वेष।
सदुण अपने हिय रखो, छोड़ दशानन भेष।।6

अगर दशानन रूप में, रहने की है सोच।
होगा धन-बल नष्ट सब, मानव बन मत पोच।।7

नहीं दशानन फूँकना, ऊर में रख कुविचार।
तुम भी रावण कलयुगी,मत कर यह अपकार।। 8

नरेन्द्र सिंह, अतरी, गयाजी

सध गए हैं जो धरा पर

सध गए हैं जो धरा पर वह तुम्हारी साधना।
सब तुम्हें ही चाहते हैं हर नये अध्याय पर।
तुम सभी को राह देती हर नये स्वाध्याय पर।।
हाथ में वीणा लिए माँ तुम सभी को साधती।
सब तुम्हारी कर रहे हैं भाव से आराधना।।
सध गए हैं जो धरा पर वह तुम्हारी साधना।।

तुम सर्मा को बाँध देती हर नये सुर-ताल पर।
झूम जाते हैं सभी जब हो कृपा उस लाल पर।।
साधना में जो रमे हैं कर रही भव पार तुम।
सब तुम्हें ही चाहते हैं गीत में नित बाँधना।
*सध गए हैं जो धरा पर वह तुम्हारी साधना।।

कर सफल माँ अब सृजन तुम हर नये अंदाज पर।
गीत गाऊ मैं तुम्हारी हर नये इक साज पर।।
साधना हो तुम हमारी गीत के आयाम तक।
राह में भटकू कहीं जब तब मुझे तुम ताड़ना।।
*सध गए हैं जो धरा पर वह तुम्हारी साधना।।

कर रहा हूँ आज विनती कर दया इस दास पर।
छंद की आधार लेकर कुछ सृजन इस खास पर।।
मान पाऊँ या न पाऊँ अब तुम्हीं आधार हो।
भक्त का उद्धार कर दो माँ भँवर से तारना।।
सध गए हैं जो धरा पर वह तुम्हारी साधना।।

विनोद बनारसी, वाराणसी उत्तरप्रदेश मो. नं. 9580114241

संत रविदास

वसुधा तुमको पुकार रही गुरु रैदास जी ।
धरा पर फिर अवतरित हो ,श्री गुरु महराज जी।
ज्ञान की गंगा से सींच दो जनमानस को।
बढ़ रही है बड़ी असमानता, अराजकता।

समता सौहार्द की जो अमृतवाणी आपने सुनाई।
आज वही बाणी ,फिर से दोहरा दो गुरुदेव ।
जन-जन में बढ़ गई है बड़ी आपाधापी।
हर तरफ व्याप्त है बड़ी छीना छनी।

संतों की वाणी हमने सुनी, हमने जानी
फिर भी हम बनी रहे अज्ञानी।
संतों ने सदमार्ग दिखाया।
भाईचारे का पाठ पढ़ाया।

कर्म बड़ा है, कर्मों से विभाजित हुआ संसार।
जिसको मानव ने बना दिया ,एण क्षेत्र का आधार।
आज धन मुख्य है, ज्ञान गौण है।
अल्पज्ञानी भी बनते सिरमौर हैं।

गुरुदेव ज्ञान का प्रकाश फैला जाओ।
समय को आपकी जरूरत है,
बस एक बार आ जाओ।
ज्ञान की अलख फिर जगा जाओ।

टिकी अग्रवाल (प्राची लेखिका), खुर्जा बुलंदशहर उत्तर प्रदेश

नवीन के दोहे

माघ मास की पूर्णिमा, जन्म लिए रविदास।
जोड़ा नाता ईश से, भक्त हुए हैं खास।।1।।
संत शिरोमणि आपको,नमन करें शत् बार।
लगन परिश्रम से किए,आप समाज सुधार।।2।।
कर्म जीत इंसान ही,जग में हुआ महान।
कहते हैं रविदास जी,जाने सकल जहान।।3।।
पिता संतोख दास हैं,कर्मा देवी माता।
जन्म लिए रविवार को, ईश्वर की सौगाता।।4।।

लोना बाई संग में,किए आपने ब्याह।
निश्चल धारा भक्ति की,रही सदा मन चाह।।5।।
सामाजिक सद्भावना,मिटा जाति का भेद।
आपस में हो एकता,मन में रहे न खेद।।6।।
मीराबाई के गुरू, भक्तिभाव के संग।
चले सत्य की राह में, दीनों के भगवंत।।7।।

मन चंगा गर आपका,मिल जाते भगवान।
पथ प्रदर्शक समाज के,योगी संत सुजान।।8।।
कर्म नहीं छोटा-बड़ा,कहते गुरु रविदास।
भटके क्यों इंसान तू,ईश्वर तेरे पास।।9।।
शामिल हैं गुरु ग्रंथ में,भजन भक्ति की धार।
जन्म जयंती आपकी,नमन करें संसार।।10।।

रामगोपाल निर्मलकर 'नवीन' धनौरा, जिला-सिवनी